Vol 3 Issue 8 Sept 2013

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-8, Sept-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

प्राचीन भारत में शोध की स्थिति

राजविन्द्र कौर

सहायक प्रोफेसर (हिन्दी शिक्षण) विश्वविद्यालय शिक्षण महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

सारांश : मानव की नैसर्गिक प्रवृत्तियों में जिज्ञासा का अप्रितम स्थान है। यह मूल प्रवृत्ति ही सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान तथा सभ्यता– संस्कृति की उत्प्रेरक शक्ति है। यह सृष्टि के आदिकाल से अखण्ड रूप से सक्रिय है। इस जिज्ञासा प्रवृत्ति के कारण ही मनुष्य विविध क्षेत्रों में अनेक प्रकार के अनुसंधान करने में समर्थ हुआ।

प्रस्तावना :

हिन्दी का अनुसंधान अंग्रेजी के 'रिसर्च' का हिन्दी रूपान्तर है। अंग्रेजी का 'रिसर्च' शब्द भी दो शब्दों के योग से बना है। इसमें रि उपसर्ग है जिसका अर्थ दुबारा और वापस होता है, सर्च मूल शब्द है जो फ्रेंच भाषा के शब्द कर्च तथा चर्च से प्रादुभूत है, इस फ्रेंच भाषा के शब्द चर्च का अर्थ खोजना तथा व्यवस्थित करना होता है, अंग्रेजी भाषा में इसी चर्च को सर्च ग्रहण किया गया है, इसका अर्थ भी अन्वेषण, गंवेषण, शोध करना, अनुसंधान, जिज्ञासा, विचारण इत्यादि होता है। अतः रिसर्च का अर्थ भी अनुसंधान, शोध, किसी विषय का वैज्ञानिक अध्ययन होता है।

प्राचीन भारत में शोध की स्थिति : प्रायः कहा जाता है कि वास्तविक इतिहास तो प्राचीन इतिहास है। आधुनिक इतिहास तो मात्र पत्रकारिता है। यह कथन वस्तुतः साहित्यिक शोध पर सही उतरता है।

पौराणिक काल : शोध आज का विषय नहीं, बहुत प्राचीन विषय है। जब से सृष्टि की रचना हुई है तब से मनुष्य कुछ नया कार्य करता रहा है। कहते हैं कि भारतीय पुराण केवल पंडितो की कल्पना मात्र है, परन्तु शोधकर्ता पर्जीटर ने अनेक ऐतिहासिक तथ्य खोजकर उनका महत्त्व प्रतिपादित किया है। अथर्ववेद में पुराणों को सृष्टि रचना के ग्रन्थ कहा गया है। सायणाचार्य ने भी पुराण का यही अर्थ किया है। शंकराचार्य ने भी उपनिषद् में आए पुराणपद का यही अर्थ किया है। जितने भी पक्षियों पर आधारित योगासन हैं ये सभी हमारे प्राचीन शोध हैं। ऋग्वेद, अथर्ववेद, सामवेद, यजुर्वेद ये सभी वेद हमारी धरोहर हैं ये अपने आप में शोध के ग्रन्थ हैं। भारतीय वैज्ञानिक आर्यभट्ट ने विश्व को शून्य से अवगत कराया ये भारतीय प्राचीन शोध था।

ज्ञान के क्षेत्र में शोध का कार्य निरन्तर जारी रहता है। शोध ज्ञान की किसी सीमा तक पहुँच कर रूक नहीं जाता। वह आगे बढ़ता ही जाता है। विज्ञान के सिद्धांतों को लोग प्रायः शाश्वत मानते रहे हैं। अब यह मान्यता भी खण्डित होने लगी है। वे परिस्थिति विशेष में भले ही सत्य अथवा अकाट्यता रहे हों पर उनकी सत्यता और अकाट्यता सार्वकालिक सिद्ध नहीं हो पायी। उदाहरणार्थ पहले अणु को पदार्थ का न्यूनतम अंश माना जाता था पर आधुनिक शोध ने परमाणु को उसका नयूनतम अंश सिद्ध किया है। यद्यपि इसे आधुनिक शोध कहा गया है परन्तु भारतीय संख्याकारों ने इसको सदियों पूर्व अन्वेषण कर लिया था। वे तो परमाणुओं को तन्मात्राओं से निर्मित्त मानते हैं। अतः परमाणु भी पदार्थ का सूक्ष्मतम अव्यव नहीं है। परमाणु से सूक्ष्म तन्मात्राएं हैं। आज एटम बनाने की यही प्रक्रिया प्रयोग की जा रही है।

विज्ञानवेता काल को जिसे भवभूति ने 'निरवोध' कहा है। समय को सैकेण्ड तक विभाजित कर पाए थे परन्तु अब नए अनुसंधान के परिणामस्वरूप सैकेण्ड भी विभाजित किया जा चुका है। सन् 1955 की आधुनिक घड़ी में सैकेण्ड तक को 9131770 भागों में विभाजित किया गया। भारतीय तत्त्वान्वेषी इससे भी सूक्ष्मकाल का विभाजन कर चुके हैं। शोधकर्ता का कार्य भूले हुए तथ्य को पुनः प्रकाश में लाना है और उसे पूर्वज्ञान की श्रृंखला से जोड़ देना है। प्राचीन काल से ही मनुष्य ने सृष्टि के जड़ चेतन तत्त्वों के सम्बन्ध में जो खोज की है। वह साहित्य, दर्शन, ज्योतिष, विज्ञान आदि शास्त्रों की उपलब्धि बन गई है।

वादासयण के ब्रह्मसूत्रों की शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य मध्वाचार्य, बल्लभाचार्य आदि ने अपने मतों के अनुकूल व्याख्या की, जिसमें उनकी मौलिक सूझ–बूझ के दर्शन होते हैं। महर्षि पंतजलि ने कात्यासन के वार्तिको पर भाष्य लिखकर जो नवीन उद्भावनाएं की, वे आज भी विद्वानों में समादृत है। पाणिनी की अष्टाध्यायों को हृदयग्राह्य करने के लिए महर्षि के भाष्य का निर्विवाद महत्त्व है। भरत के नाट्यशास्त्र में रस निष्पति के सूत्र विभावानुभावष्याभिचारिसंयोगात रस–निष्पतिः की व्याख्या करने में उनके परवर्ती आचार्यों ने श्रम किया, उनकी मीमांसा, न्याय तथा सांख्य आदि से प्रभावित जो व्याख्या की, वह शोध के अंग थे।

साहित्यिक काल : आंग्ल शासकों के भारत में आगमन के पश्चात् भारतीय विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई तथा सर्वप्रथम कलकत्ता, मद्रास, इलाहाबाद और बम्बई में पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के आधार पर भारतीय विश्वविद्यालयों का गठन किया गया। सन् 1910 ई. में हिन्दी साहित्य से सम्बन्धित प्रथम शोध प्रबन्ध 'इटालियन विद्वान एल.पी. टैसीटरी' ने फलोरेन्स विश्वविद्यालय में प्रोफेसर पेवोलिनी के निर्देशन में 'रामचरित मानस और रामायण' प्रस्तुत किया। काल और प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए इस अन्तराल को कई वर्गों में विभाजित करने का प्रयत्न भी विद्वानों द्वारा किया गया। इस दृष्टि में सर्वप्रथम वर्गीकरण डॉ. उदयभान सिंह ने प्रस्तुत किया। उन्होंने 1918 ई. से हिन्दी शोध का विकास माना है। डॉ. सिंह ने इटालियन भाषा में लिखे टैसीटरी के शोध ग्रन्थ की अपेक्षा की। 1918 ई. में डॉक्टर ऑफ डिविलिटी की उपाधि लन्दन विश्वविद्यालय में जे.एन. कारपेन्टर द्वारा प्रस्तुत 'तुलसीदास के धर्मदर्शन' नामक शोध प्रबन्ध को प्रथम शोध ग्रन्थ माना है। फिर सन् 1930 ई. में श्री मोहिउद्दीन कादरी ने 'हिन्दुस्तान फोनोटिक्स' में इसी विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि मिली। भारतीय विश्वविद्यालय से सर्वप्रथम शोध उपाधि प्राप्त करने वाले सज्जन डॉ. बाबू राम सक्सेना हैं। 'अवधी के विकास' पर प्रयाग विश्वविद्यालय से डी.लिट. की उपाधि प्राप्त की थी। इसकी भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से उचित न होने के कारण इसे साहित्यिक शोध परम्परा में नहीं रखा गया।

भारतीय विश्वविद्यालय में साहित्यिक शोध की दृष्टि से प्रथम शोध प्रबन्ध 1934 ई. में काशी विश्वविद्यालय की डी.लिट. उपाधि हेतु 'दि निर्गुण स्कूल ऑफ हिन्दी पोयट्री' विषय पर डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल' द्वारा प्रस्तुत किया गया।

निष्कर्ष : निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शोध का विषय बहुत प्राचीन है जब से सृष्टि का निर्माण हुआ है। तब से शोध किसी न किसी रूप में हुआ है। प्राचीन साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक एवं विशाल है। इस प्राचीन साहित्य पर बहुत शोध हो चुके हैं। परन्तु इस प्राचीन साहित्य पर आज का वही शोधार्थी वही शोध कर सकता है जो आधुनिक भाषाओं के ज्ञान के साथ संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं एवं प्राचानी लिपियों के ज्ञान के सम्बन्ध में समान रूप से अधिकारी हो। प्राचीन ग्रन्थों का शोध करते समय तात्कालीन, सांस्कृतिक, परम्पराओं और ऐतिहासिक परिवर्तनों से परिचित हुए बिना प्राचीन साहित्य पर शोध किया जाना असम्भव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सावित्री सिन्हा : डॉ. विजेन्द्र स्नातक, अनुसंधान की प्रक्रिया', नेशनल पब्लिशिंग

हाऊस, 1969, नई दिल्ली
सावित्री सिन्हा : अनुसंधान की स्वरूप', दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1854
मःहःराजूरकर राजमल वोरा : हिन्दी अनुसंधान का स्वरूप, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 1985, नई दिल्ली
विनय मोहन शर्मा : शोध प्रबोध, नेशनल पेपर बैक्स, 2008, नई दिल्ली
कैलाश नाथ मिश्र : हिन्दी अनुसंधान : वैज्ञानिक पद्धतियाँ, सुधीर तिवारी, 1990, कानपुर

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium   Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net